महत्वपूर्ण एवं खास

महबूबा का संदेश

जम्मू-कश्मीर की मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने अपने वित्त मंत्री हसीब द्राबू को बर्खास्त करके पीडीपी के सभी धड़ों के साथ ही राज्य सरकार में सहयोगी भाजपा के एजेंडे का राग आलापने वालों को भी सख्त संदेश दिया है। हसीब को अपनी उस टिप्पणी के लिए बर्खास्त किया गया, जिसमें उन्होंने पार्टी लाइन और राजनीतिक हितों से अलग हटकर कहा कि 'कश्मीर का मुद्दा राजनीतिक नहीं वरन सामाजिक समस्या है।' महबूबा मुफ्ती का बहुत साफ मत है कि वह कश्मीर मसले में अपने मूल एजेंडा से भटकाव कतई बर्दाश्त करने के मूड में नहीं हैं। भाजपा-पीडीपी गठबंधन के प्रमुख संकटमोचक हसीब द्राबू की बीजेपी के साथ निकटता और सामाजिक मुद्दों को हल करने की आवश्यकता को रेखांकित करने वाले उनके संभाषण ने पीडीपी को संकट में डाल दिया था। महबूबा ने फौरन भांप लिया कि अगर उनके सहयोगियों के इस तरह के कथनों को बर्दाश्त करने की इजाजत दी जाती है तो उनकी राजनीति का मूल विषय ही संकट में पड़ जाएगा। महबूबा न केवल आंतरिक बातचीत के माध्यम से राजनीतिक समाधान की दृढ़ समर्थक हैं, बल्कि कश्मीर मुद्दे पर पाकिस्तान के साथ बातचीत की वकालत भी करती रही हैं। महबूबा के इस रुख से सरकार में उनकी सहयोगी भाजपा के अलंबरदार असहज हैं। अनुच्छेद 370 को समाप्त करने पर लगातार हल्लागुल्ला किये जाने से पीडीपी और उसकी मुखिया महबूबा की स्थिति पहले से ही कमजोर है। अनुच्छेद 370 जो कि जम्मू-कश्मीर को विशेष दर्जा देता है, भाजपा के निशाने पर है और इसे लेकर महबूबा राज्य के विपक्षी दलों के निशाने पर। उनके राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियोंङ्क नेशनल कानफ्रेंस और हुर्रियत कानफ्रेंस के कुछ तत्व पहले ही इस बात का ताना देते रहते हैं कि सीएम महबूबा आरएसएस के निर्देशों के तहत काम कर रही हैं। अगर महबूबा ने हसीब द्राबू के विचारों को नजरअंदाज कर दिया होता तो उनके वे विरोधी भी राजनैतिक मुद्दों पर लीपापोती का आरोप लगाते जो कश्मीर में अशांति के आधार थे। यह तभी स्पष्ट हो गया था कि जब नेशनल कानफ्रेंस और हुर्रियत कानफ्रेंस ने हसीब की टिप्पणी पर फौरन शोर मचाना शुरू कर दिया था, तब भी जब मुख्यमंत्री ने अपने मंत्री को मंत्रालय से बाहर कर दिया। पीडीपी स्पष्ट रूप से कश्मीर-मुस्लिम केंद्रित राजनीति में मजबूती से पांव जमाना चाहती है।

कलम के बूते सिर कलम

कलम से काम करने वाले कलम के मजदूर होते हैं और कलम बनाने वाले करोड़ों-अरबों का घोटाला करते हैं। यह शायद वैसे ही होगा जैसे तलवार से लड़ने वाले अपनी जान देते हैं और तलवार बनाने वाले अपनी तिजोरियां भरते हैं। इसे ऐसे भी कहा जा सकता है कि जैसे कलम से लिखने वाले लेखक तो दर-दर की ठोकरें खाते हैं और उसके प्रकाशक ऐश करते हैं। यह ऐसा बिल्कुल नहीं है कि अगर कोई कमल अपनी राजनीतिक पार्टी बनाए तो उस कमल का बिल्कुल ही विरोधी हो जाए, जो एक पार्टी का चुनाव चिन्ह है। फिर भी एक ही चीज की कई भूमिकाएं हो सकती हैं। अब कलम तो साहब लेखक भी चलाता है। लेखक को अगर बहुत सम्मान देना हो तो उसे बेशक कलम के सिपाही का खिताब दे दो, पर होता बेचारा कलम का मजदूर ही है। लेकिन उसके मुकाबले कलम चलाने वाला बाबू मुल्क चलाता है। हालांकि ऐसी गलतफहमी लेखक को ज्यादा होती है, बाबू को कम होती है। कलम की ताकत का घमंड भी लेखक को ही ज्यादा होता है और वह उसे तलवार से ज्यादा ताकतवर मान लेता है और कई बार उसी तलवार से अपनी गर्दन कलम करवा बैठता है। बहरहाल, कलम की ताकत का जमाना है। थाने के मुंशी की कलम क्या खेल कर दे, कोई अंदाजा भी नहीं लगा सकता था। आज भी अदालतों को रोज पुलिस को हड़काना पड़ता है कि केस ठीक से बनाया ही नहीं, इसीलिए अपराधी को छोड़ना पड़ रहा है।

नरेश अग्रवाल वायरस के मायने

बीते सोमवार भारतीय राजनीति में एक सारगर्भित लम्हा देखा गया। उस दिन, नाराज नरेश अग्रवाल ने समाजवादियों के साथ अपने संबंध तोड़ दिए क्योंकि पार्टी राज्यसभा में उन्हें एक और कार्यकाल के लिए भेजने में या तो असमर्थ थी या उन्हें भेजना नहीं चाहती थी। उनका समाजवादी पार्टी से बाहर निकलने का फैसला उतना आश्चर्यजनक नहीं था, लेकिन हैरत यह देखकर हुई कि बिना कोई सवाल पूछे भारतीय जनता पार्टी उन्हें तत्काल स्वीकार करने के लिए बेहद उत्सुक नज़र आई। उनकी ही जाति के एक केंद्रीय मंत्री को नरेश अग्रवाल की अगवानी करने का जिम्मा सौंपा गया ताकि कैमरे पर दोनों को साथ दिखाकर जातिगत लाभ उठाया जा सके। वास्तव में यह एक बड़ी पकड़ है। सत्तारूढ़ पार्टी की अजेयता का एक और प्रमाणपत्र। यह एक महत्वपूर्ण क्षण था, जिसमें पता चला कि भाजपा के कांग्रेसीकरण की प्रक्रिया ने कितनी प्रगति की है। माननीय नरेश अग्रवाल मूल रूप से कांग्रेसी नेता रहे हैं। उत्तर प्रदेश के कांग्रेसियों ने हमेशा से ही करीब सात दशकों तक खुद को बेहतरीन नस्ल का माना है, वे एक विशिष्ट गुणों के साथ बेहद चतुर और सुविधाजनक अंतरात्मा वाले हैं। 1990 के मध्य में जब उन्हें इसका अहसास हुआ कि कांग्रेस का भविष्य धूमिल है तो वे तत्काल राज्य में उभरती दो ताकतों-समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी में संभावनाएं तलाशने पहुंच गए। माननीय नरेश अग्रवाल प्राचीन भारत की पुरातन राजनीति के सभी विषम तरीकों का मूर्त रूप से प्रतिनिधित्व करते हैं। अब इस शख़्स का न्यू इंडिया के प्रबंधकों और चौधरियों द्वारा तत्परता से स्वागत किया गया। ऐसा नहीं है कि वे नरेश अग्रवाल और उनके राजनीतिक पहचान के रिकॉर्ड से वाकिफ नहीं हैं। वह पुराने राजनीतिज्ञ हैं, कांग्रेसी वैरायटी के राजनीतिक व्यवहार-मूल्यविहीन, सिद्धांतहीन, आदर्श-विहीन को उन्होंने आत्मसात किया है। यह राजनीति विफल रही और 2014 में जनता ने इसे व्यापक स्तर पर नकार दिया। कठिन परिस्थिति में साथ छोड़ने और मौका देख किनारा करने वालों में नरेश अग्रवाल अकेले नहीं हैं। कुछ दिनों पहले हमारे सामने किरोड़ी मल मीणा का मामला आया, जिन्होंने राजस्थान में कांग्रेस का हाथ छोड़कर भाजपा का दामन थाम लिया। इसके अलावा भी कई ऐसे नाम हैं। बहुगुणा के वारिसों, जिसे जोरशोर से भ्रष्ट और अक्षम कहा गया, उसे ही बाद में गर्व के साथ गले लगाया गया। इससे भी पहले एक बड़ी मछली के रूप में हेमंत बिस्वा सरमा को भाजपा द्वारा अपने कुनबे में शामिल किया गया। नरेश अग्रवाल का मामला नए चाणक्य की नई मनोदशा की झलक पेश करता है। और यह नई मनोदशा पुरानी कांग्रेस की मनोदशा में बदल रही है, जिसका विचार सत्तारूढ़ दल को धर्मशाला की तरह समझने का होता है, जहां कुछ बुनियादी नियमों और प्रोटोकॉल के साथ हर कोई खप सकता है। यह एक परिचित घटना है और शायद एक अपरिहार्य दुविधा भी है। यह वर्ष 1969-70 की भारतीय राजनीति की याद दिलाती है। उस समय खलबली मची थी जब इंदिरा गांधी ने सोचा था कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, राष्ट्रीय स्तर पर संघर्ष करने वाली पार्टी को औपनिवेशिक भारत के बाद के परिवर्तन के एक साधन के रूप में बदलना होगा। इंदिरा गांधी आर्थिक और सामाजिक शक्तियों की एक क्रांतिकारी पुनर्व्यवस्था के लिए खड़ी थीं और प्रगतिशील तथा कम्युनिस्ट कट्टरपंथी और कांग्रेस के अंदर यथास्थितिवादियों के खिलाफ संघर्ष में इंदिरा की मदद कर जितना खुश थे, उससे कहीं ज्यादा इस बात से खुश थे कि कांग्रेस दोफाड़ हो गयी। और जब राजनीति की लहर इंदिरा के पक्ष में दिखाई दी तो सभी पुराने, नकार दिए गए लोग और यथास्थितिवादी चुपचाप इंदिरा के पाले में कतार बनकर चले आए और उन्हें सहजता से स्वीकार भी किया गया। इंदिरा गांधी ने मार्च 1971 में चर्चित लोकसभा चुनावों में जीत हासिल की थी। उस चुनावी जीत ने उनके नेतृत्व को पावन करार दिया और एक व्यक्तित्ववादी पंथ का बीजारोपण हुआ, लेकिन अवसरवादियों ने देखा कि कांग्रेस की परिवर्तनकारी क्षमता खत्म हो गई और कांग्रेस मृत हो गई। कुछ ऐसा ही 1979-80 में एक बार फिर नज़र आया और 1977 में उनकी हार के बाद कुछ लोगों ने उनके और संजय गांधी के खिलाफ विद्रोह कर दिया और चुपचाप कांग्रेस से अपना रास्ता नाप लिया। आपातकाल के संत्रास और बदनामी के बावजूद अवसरवादी और 'यथार्थवादी' एक बार फिर इंदिरा गांधी के सत्तावादी राजनीतिक व्यक्तित्व को मजबूत करने के लिए आ गए। धर्मशाला उपमा गलत नहीं है। कोई भी पार्टी जो इस बड़े और जटिल देश में शासन करने की उम्मीद करती है, उसे खुद को केंद्र में रखना होगा और उसे गैर-वैचारिक शासन के तरीकों को सीखना होगा तथा किसी भी या सभी तरीकों से सत्ता हासिल करनी होगी।

अस्ताचल में सितारा

जीवनभर भौतिक विज्ञान और ब्रह्मांड का अध्ययन करने वाले स्टीफन हॉकिंग ने शायद अब तक ब्रह्मांड के रहस्य को सुलझा लिया होगा। जैसी कि मान्यता है कि मरने के बाद हम बनाने वाले से मिलते हैं। कुल मिलाकर 76 साल तक जीवित रहने के बाद अब वह नहीं हैं। अगर हम स्टीफन हॉकिंग की मान्यता को मानें तो दिमाग और कुछ नहीं बल्कि कंप्यूटर की तरह है और इसके पार्ट खराब होने के बाद आपका अस्तित्व खत्म हो जाता है। स्वर्ग या मृत्यु के बाद जीवन जैसा कुछ भी नहीं है। तो फिर आखिर ब्रह्मांड अस्तित्व में कैसे आया। स्टीफन हॉकिंग मानते थे कि सहज सृजन ही वह कारण है जो यह बताता है कि कुछ है। वैसे उनकी इन दोनों मान्यताओं का कोई प्रमाण या साक्ष्य नहीं है। हम कहां से आए हैं, ऐसे सवाल और ब्रह्मांड की थाह पाने की जिज्ञासा सनातन है। ब्रह्मांड जैसा है, ऐसा क्यों है और यह क्यों अस्तित्व में है। इन सवालों के जवाब ढूंढ़ने की चाहत अंतरिक्ष के घने अंधेरे के बीच हॉकिंग को जबरदस्त सफलता की ओर खींच ले गयी। उस वैज्ञानिक समुदाय के बीच उन्होंने अपने लिए जबरदस्त यश कमाया जो उन्हें न्यूटन और आइंस्टीन के समकक्ष मानता था। ब्रिटिश प्रोफेसर ने यह उपलब्धि अपनी उस सैद्धांतिक भविष्यवाणी के लिए हासिल की थी, जिसमें उन्होंने बताया था कि ब्लैक होल इतने घने नहीं हैं कि कोई भी वस्तु उनके गुरुत्वाकर्षण से बच ना सके। वैज्ञानिकों ने ब्लैक होल से सैद्धांतिक रूप से निकलने वाले तापीय विकिरण को हॉकिंग विकिरण नाम दिया था। विश्व की उत्पत्ति कैसे हुई, इसे समझाने के लिए भौतिक विज्ञानी ने दो सिद्धांतों-सापेक्षता का सिद्धांत और ब्रह्मांड में सबसे सूक्ष्म कण किस तरह व्यवहार करते हैं, से जुड़े क्वांटम सिद्धांत को एक करने पर कार्य किया। 1988 में प्रकाशित पुस्तक 'अ ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ टाइम' जिसमें उन्होंने अंतरिक्ष के बारे में विस्तार से बताया था, ने उन्हें आम जनता से जोड़ दिया। हॉकिंग अपनी जबरदस्त मानसिक क्षमता और प्रतिभा के दम पर एक स्टार बने रहे। बावजूद इसके कि वह एक ऐसे रोग से पीड़ित थे, जिसने उन्हें जीवन के अधिकांश समय तक लकवाग्रस्त और व्हीलचेयर से बांधे रखा। दुनिया को ज्यादा न्यायोचित बनाने के लिए तकनीक का इस्तेमाल करने को लेकर दी गई उनकी सलाह का अनुपालन करना ही उस महान वैज्ञानिक को सच्ची श्रद्धांजलि होगी, जिसने अंतरिक्ष के बारे में स्वीकार्य सत्य की सीमाओं को और भी आगे बढ़ाने का महती काम किया।

सेहत के नाम पर रोग का कारोबार

वर्तमान समय में जहां एक ओर विज्ञान स्वस्थ और खुशहाल जीवनशैली के लिए नई-नई संभावनाएं तलाश रहा है वहीं दूसरी ओर कुछ कम्पनियां सिर्फ मुनाफा कमाने के लिए विज्ञान और तकनीक के सहारे भ्रम और भय का माहौल बनाकर लोगों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ कर रही हैं। गलत व अधूरे तथ्यों के आधार पर अपने उत्पाद को बेच रही हैं। जिसका परिणाम ये है कि जिस देश में पानी बेचना पाप माना जाता था, आज वहीं बोतलबंद पानी या रिवर्स ओसमोसिस (आरओ) तकनीक द्वारा फ़िल्टर किया हुआ पानी हमारे जीवन का हिस्सा और जरूरत बताई जाने लगी है। क्या ये पूरी तरह सच है कि आरओ फ़िल्टर वाला पानी ही शुद्ध और स्वास्थ्यवर्द्धक है? या फिर ये सिर्फ एक भेड़चाल है, जिसमें फंसकर अधिकांश लोग जानकारी के अभाव में अपना पैसा, स्वास्थ्य और समय बर्बाद कर रहे हैं। आरओ फ़िल्टर बनाने वाली कम्पनियां अक्सर ये तर्क देकर अपने प्रोडक्ट्स बेचती हैं कि आपके पानी में टीडीएस की मात्रा अधिक है, जिससे तमाम तरह की बीमारियां हो सकती हैं। लेकिन ये पूरी तरह से एक मिथ्या प्रचार है। टीडीएस का अर्थ है टोटल डिसॉल्वड सॉलिड्स यानी पानी में घुले हुए कणों की संख्या। जल में घुले हुए खनिजों के लवण जैसे कैल्शियम, मैग्नीशियम, सोडियम, पोटेशियम आदि के क्लोराइड, बाई कार्बोनेट लवण, कार्बनिक तथा अकार्बनिक पदार्थ, माइक्रो ऑर्गनिज़्म्स आदि को सम्मिलित रूप से टीडीएस कहा जाता है। जो मशीन जल में टीडीएस की मात्रा का माप करती है, वो जल में घुले हुए कुल कणों की संख्या की माप तो कर सकती है लेकिन वह लाभदायक और हानिकारक कणों में भेद नहीं कर सकती। इसलिए जल में लाभदायक कणों की संख्या अधिक होने पर भी जल का टीडीएस अधिक होगा। जबकि दूसरी ओर प्रदूषित जल में हानिकारक कणों (रासायनिक पेस्टिसाइड्स) की संख्या कम होने पर भी टीडीएस कम होगा। 'मेडिकल जर्नल ऑफ़ आर्म्ड फोर्सेज ऑफ़ इंडिया' की 2014 में छपी एक रिपोर्ट के अनुसार यदि आरओ वाटर या पैकेज्ड वाटर का प्रयोग भोजन बनाने में किया जाये तो इससे विटामिन्स और खनिजों की मात्रा में भारी कमी आ जाती है। उदाहरण के तौर पर पकाये गए भोजन में करीब 60 प्रतिशत मैग्नीशियम और करीब 70 प्रतिशत मैगनीज़ की मात्रा में कमी आती है। इन तथ्यों को विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट का समर्थन मिलता है। इसी रिपोर्ट में कहा गया है कि लम्बे समय तक आरओ वाटर इस्तेमाल करने से स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। पानी के नकारात्मक प्रभाव की समस्या उन देशों में भी है जहां पीने का साफ़ पानी नहीं है। साथ ही उन देशों में भी जहां आरओ वाटर या पैकेज्ड वाटर का प्रयोग बड़े स्तर पर हो रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार आरओ वाटर या पैकेज्ड वाटर लगातार पीने से हृदय संबंधी विकार, थकान, कमजोरी, मांसपेशियों में ऐंठन, सिरदर्द आदि समस्याएं होने की प्रबल संभावना रहती है। नेचुरल रिसोर्सेज डिफेन्स कॉउन्सिल नाम की एक अमेरिकी संस्था के अनुसार बोतलबंद पानी की बोतल को मुलायम बनाने में थैलेट्स नामक रसायन का प्रयोग होता है। यह वही रसायन है, जिसका प्रयोग तमाम तरह के कॉस्मेटिक्स, इत्र, खिलौनों आदि के निर्माण में होता है। शरीर में पहुंच कर यह व्यक्ति की प्रजनन क्षमता पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। इसके अतिरिक्त पानी की बोतल बनाने की प्रक्रिया में एंटिमनी नामक एक रासायनिक तत्व प्रयोग किया जाता है, जिसका किसी भी माध्यम से मानव शरीर में पहुंचना हानिकारक है। बोतल का पानी जितना पुराना होगा, एंटिमनी की इस पानी में घुलने की संभावना उतनी ही अधिक होगी।

शब्द सामर्थ्य Shabd Samarth

बाएं से दाएं
1. घुमाव-फिराव वाला, आड़ा-तिरछा, जो कठिन हो 3. कुशलता, दक्षता, विशेषज्ञता 6. लोग, प्रजा 7. सीता, जनकनंदनी 9. सुंदर, कामना करने योग्य 10. क्रोधपूर्वक बोलने को उद्यत होना, जोश में आना, क्रोधातिरेक में चेहरे का लाल होना 13. अधीनता, मातहती, वश 14. दबाव, भार, वजन 16. हद, मर्यादा 18. प्रमाण-पत्र, प्रमाणिक कथन या बात 19. पछताना (मुहा.) 21. अनुचित मिश्रण, मिलावट 22. विफल, बेहोश, बौखलाया हुआ।

ऊपर से नीचे
1. सहारा, आश्रय, प्रतिज्ञा, संकल्प 2. परिश्रम 4. रात, रात्रि, निशा 5. पुत्र, बेटा 8. मूल्य, दाम 9. कपड़े का मोटा परदा 11. संदेश भेजना, उच्चारण कराना, कहलवाना 12. मृतकों को जीवित और रोगियों को स्वस्थ कर देने वाला व्यक्ति, प्रेमपात्र की संज्ञा 14. देने की क्रिया, खैरात 5. कुमार्गी, दुराचारी 17. मस्तक, माथा, ललाट 18. प्रश्न, समस्या 20. सहायता, सहारा 21. पशुओं को खिलाने वाली हरी पत्तियां, तृण, तिनका।

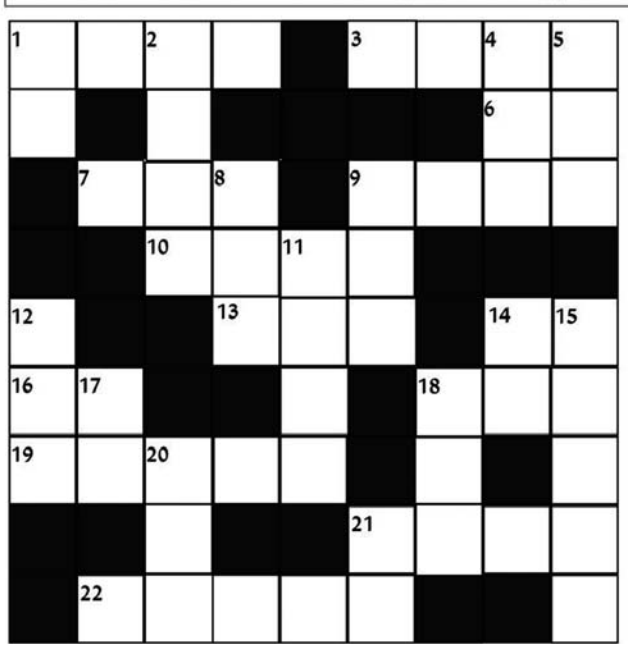

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 52 का हल

ज	द्दो	जे	ह	द	■	स	पू	त
ल	■	ब	ल	वा	न	■	■	द
म	ह	क	■	खा	म	खां	■	बी
ग्न	■	त	ल	ना	■	स	फ	र
■	म	रा	■	■	■	ना	टा	■
■	हि	■	स	■	■	■	फ	न
■	ला	ज	वा	ब	■	म	ट	र
मां	■	ग	■	सं	त	ति	■	भ
■	मा	त	ह	त	■	■	प	क्षी

सू-दोकू

	3		7				2	1
2				9		4		
	7		1				5	
		1		5		2		7
	5				4			
		4		1		8		5
					1			
1		5		3		9		
	2		6		5		1	

नियम
1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.52 का हल

8	9	5	1	6	3	2	4	7
3	2	1	9	7	4	8	6	5
4	7	6	2	5	8	3	9	1
7	6	9	5	2	1	4	3	8
1	8	3	4	9	7	6	5	2
2	5	4	8	3	6	1	7	9
5	3	8	7	4	2	9	1	6
6	1	7	3	8	9	5	2	4
9	4	2	6	1	5	7	8	3

राशिफल

मेष- आप धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में सहयोग करेंगे, यदि आप व्यापार कर रहे हैं तो आपके व्यापार में आज कुछ नए परिवर्तन होंगे, जिससे आगे चलकर आपको लाभ होगा।
वृष- आपके पुराने रूके हुए कार्य कुछ झंझटों व खर्चा करने के बाद पूर्ण हो जाएंगे।
मिथुन- आज आपमें अपने कार्य के प्रति लगन रहेगी और रूके हुए कार्य पूर्ण होंगे। आप नए-नए कार्यों में विनियोग करेंगे।
कर्क- कार्यक्षेत्र में आज जबरदस्त उछाल आपको दिखाई पड़ेगा। आप अपने जूनियर्स के लिए भी थोड़ा सा प्रोटेक्टिव महसूस करेंगे।
सिंह- अपनी शान शौकत के लिए धन का व्यय करेंगे, गरीबों की सहायता और अपनी वाक् पटुता, कार्य कुशलता से दूसरे व्यक्तियों को अपनी ओर आकृष्ट करने में सक्षम रहेंगे।
कन्या- आज राशि से नवम भाव में चन्द्रमा राज्य विजय कारक है। आपके प्रभाव प्रताप में वृद्धि होगी।
तुला- राज्य और समाज की ओर से वांछित सहयोग मिलेगा, परिवार की तरफ से भी शुभ समाचार मिलने के संकेत हैं।
वृश्चिक- अनावश्यक खर्चे सामने आएंगे, जो आपकी खिन्नता को बढ़ा देंगे।
धनु- आपके भौतिक सुख सुविधाओं में कुछ कमी आ सकती है।
मकर- कुछ नौकरी से संबंधित अधूरे काम आज आपको पूरे करने होंगे। दोपहर के बाद दौड़भाग बढ़ जाएगी।
कुंभ- माली हालात को लें तो आज का दिन काफी मजबूत है। दिन भर लाभ के अवसर प्राप्त
मीन- आज का दिन लाभकारक रहेगा। व्यापार में जोखिम उठाने का परिणाम आज हितकर होगा।